'जंगल के दावेदार' उपन्यास में लोकनायक बिरसा मुंडा के आदिवासी संघर्ष गाथा'

रूपाली संभाजी पाटिल
शोधछात्रा
शिवाज़ी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर।
ईमेल _vedika1166@gmail.com .
मो.नं_ 9359666647

शोध सार-

भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में कई सारे लोगों ने आंदोलन करके बलिदान दिया लेकिन आजादी के बाद इस आजाद होने का श्रेया कुछ खास लोगों को जाता है और जो लोग बच्चे लोगों ने अपना योगदान दिया, बलिदान दिया और वे इतिहास के किताबों के पन्नों के साथ गायब हो गए। नायक बिरसा मुंडा और आजादी की लड़ाई जो आदिवासियों ने लड़ी है यह भी एक इतिहास की किताबों से गायब है। बिरसा मुंडा ने किया आंदोलन बिल्कुल सजीव रूप में चित्रित किया है। उपन्यास का नायक बिरसा मुंडा जो इस उपन्यास के केंद्रीय स्थान पर है और पश्चिम बंगाल, बिहार इलाकों के आदिवासी थे उन सभी आदिवासियों की जीवनी, साथ ही उनकी संस्कृति, अज्ञानता यहाँ देखने को मिलती है। आदिवासी समाज के लोग सीधे-साधे हैं। सामंतवादी व्यवस्था उनका शोषण करती हैं, तो दूसरी ओर आदिवासियों को उनके जंगल से, उनकी जमीनों से बेदखल करती हैं।

बीज शब्द:- संलग्न, शैशव, परोक्ष, उपादान, अनुच्छेद, कम्युनिस्ट, अभिज्ञता, साम्यवादी, सानिध्य, सेवानिवृत्त, अभिजात आदि।

भूमिका :-

भारत देश का इतिहास साक्षी है कि जब भी कोई संकट देश, धर्म, जाति पर आता है तो कोई ना कोई व्यक्ति मसीहा बनकर सामने आती है। उस संकट का शोषण, दमन का डटकर सामना करता है। उसके खिलाफ आंदोलन करके उसका नेतृत्व भी करता है। हमारा समाज शिक्षित' सुसंस्कृत तथा सभ्य है लेकिन हमारे साथ एक और समाज है जो अधिकार से समाज में अपरिचित या तिरस्कृत रहा है। वह समाज के लोग आज भी अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए सदियों से जीवन संघर्ष कर रहे हैं। वह अधिवासी, वनवासी, जनजाति के लोग हैं। भारतीय उपन्यासों में आदिवासी जीवन पर रचे गए कई महत्वपूर्ण उपन्यास हैं। इन उपन्यासों के रचनाकारों में बंगाली लेखिका महाश्वेता देवी का नाम आता है। हिंदी में उनका 'जंगल के दावेदार' उपन्यास प्रभावशाली हुआ। बिहार के अनेक जिलों में घने जंगल है उसमें रहनेवाले आदिम जातियों की अनुभूतियां पौराणिक कथाओं और सनातन में विश्वास, सजीव, सचेत, आस्था का मार्मिक चित्रण इस उपन्यास में किया है। इसमें जंगलों को मां देवी के समान समझकर उसकी पूजा की जाती है। जंगल में कौल, संथाल, हूल, मुंडा जैसे जातीयों का शोषण होता है। उसका विरोध करने के लिए, जंगल की मिल्कियत अधिकारों को फिर से प्राप्त करने का उद्देश्य मन में रखकर आंदोलन किया। एसे सशस्त्र क्रांति की महागाथा का वर्णन महाश्वेता देवी ने 'जंगल के दावेदार' में की है।

आदिवासीयों की संघर्ष गाथा :-

आशिया खंड में भारत देश का अपना विशिष्ट स्थान है। भारत के सभी प्रांतों में अलग-अलग जाति-जनजाति, पंत, धर्म, संप्रदाय के लोग रहते हैं। सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, और सांप्रदायिक पंत में विभिन्नता दिखाई देती है। सब में एकता और बंधुभाव प्रेम दिखाई देता है। पूरे भारत देश में अनेक प्रांत है। उसमें आदिवासी समाज बसा हुआ है। देश में आदिवासी प्रांत के लोग अपनी विशिष्ट पहचान बन रखते हैं। अनादिकाल से आदिवासी समाज प्राकृतिक पर्यावरण में सदैव पल्लवित होता है। आदिवासी समाज का जीने का आधार प्रकृति है। आज विकासशीलता की ओर आदिवासी समाज बढ़ रहा है लेकिन उसके लिए बहुत से उतार-चढ़ाव का, संघर्ष का, संकटों का सामना करना पड़ता है। मानव वंश से प्रत्येक समाज में जाति की उत्पत्ति हुई है। आदिवासी समाज की जनजातियों की उत्पत्ति के बारे में मराठी विश्वकोश में लिखा है कि "भारत के आदिवासी द्रविड़ एवं मंगोलियन वंश के हैं।

मानववंश शास्त्रज्ञ जोसेफ हेडन के अनुसार प्राग्न द्रविड़ काल में आदिवासी ही भारत में आए। उसी युग में द्रविड़ लोक सीमावर्ती परिश्रम से आए। बाद में आर्यों, द्रविडों ने वायव्य तथा दक्षिण प्रांतों से कुछ लोगों को निष्कासित किया। निष्कासित हुए लोग मध्यक्षेत्र के पर्वत-पहाड़ियों, घने जंगलों में निर्वाचित हुए वहीं आज आदिवासी है। बी.एस. गुहा ने आदिवासियों की उत्पत्ति नेग्रिटो प्लोटो-ओस्ट्रेलाइड़ या मंगोलियन वंश से मानी है"।[1] अनेक विद्वानों ने आदिवासी जनजातियों के वंश के बारे में एकमत नहीं दिखाई देता है आज किसी जाति की का सही-सही वंश ढूंढना असंभव लगता है। आदिवासी समाज की अनेक विभिन्न जातियां है। जो सामाजिक, धार्मिक, भौगोलिक तथा सांस्कृतिक दृष्टि से मिलना है हर आदिवासी जाति की बोली भाषा अलग है। आदिवासियों का मूल क्षेत्र महाराष्ट्र, कर्नाटक, गुजरात, बिहार, मध्य प्रदेश, केरला, उड़ीसा, उत्तर प्रदेश, आंध्र प्रदेश आदि है। 'आदिवासी' शब्द आदि + वासी इन दो शब्दों से बना है। आदिवासी का अर्थ 'प्रारंभ' में और वासी यानी 'निवासी करने वाला' है। आदिवासी को अंग्रेजी शब्द 'aborigenes' हिंदी और मराठी पर्यायवाची शब्द है। आदिवासी समाज को शब्दों में बब्द नहीं किया जा सकता। मानक हिंदी शब्दकोश "किसी स्थान पर रहनेवाले वहां के मूल निवासी यानी आदिवासी है"।[2] भारतीय संस्कृति कोष में लिखा है - "नगर संस्कृति से दूर रहनेवाले मूलनिवासी एवं आर्य और द्रविड़ इन दो मानव समाज को छोड़कर उनसे भी पूर्व भारत या अन्य विदेश से भारत के पर्वत- पहाड़ियों, जंगल में रहनेवाली वन्य जाति को आदिवासी कहा जाता है"।[3] इससे स्पष्ट होता है कि नगर संस्कृति से दूर रहनेवाले व्यक्ति जंगल और पर्वत में आश्रय लेकर रहते हैं उन्हें आदिवासी कहते हैं।

प्राचीन काल में आदीवासियों की मुंडा, कोलविल, सावताल आदि जातियां हैं। पहले क्षेत्र में छोटा नागपुर घने जंगलों में बसा था। फिर घने जंगल के कौल जाति के लोगों ने साफ करके अपना गांव का निर्माण किया। कौल जाति के कई गोत्र है। इसमें से एक मुंडा जाती है वह सब आदिवासीयों से सम्मानित होती थी। मुंडाओं द्वारा बसाया गए गांव में कूट-कूटी लगाकर लोग जहाँ रहते वहाँ की जमीन के मालिक कहलाते थे। बाद में इन आदिवासियों की सुखी जीवन में संकट आया। लालची मनुष्य ने जंगलों की जमीनों पर आक्रमण किया। इसी कारण आदिवासियों की ग्राम व्यवस्था तथा उपजीविका साधन खेती सब कुछ बिखरने लगा। जंगल में रहनेवाले मुंडा समुदाय के आदिवासी लोगों की संपूर्ण संस्कृति यहाँ दृष्टिगत होती है। आदिवासी जिस तरह से जंगल से प्रेम करते हैं उनकी संस्कृति का, किस तरीके से जंगल और वनों का पालन-पोषण करती है यह सब इस उपन्यास में देखने को मिलता है। भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में कई सारे लोगों ने आंदोलन करके बलिदान दिया लेकिन आजादी के बाद इस आजाद होने का श्रेया कुछ खास लोगों को जाता है और जो लोग बच्चे लोगों ने अपना योगदान दिया, बलिदान दिया और वे इतिहास के किताबों के पन्नों के साथ गायब हो गए। नायक बिरसा मुंडा और आजादी की लड़ाई जो आदिवासियों ने लड़ी है यह भी एक इतिहास की किताबों से गायब है। बिरसा मुंडा ने किया आंदोलन बिल्कुल सजीव रूप में चित्रित किया है। उपन्यास का नायक बिरसा मुंडा जो इस उपन्यास के केंद्रीय स्थान पर है और पश्चिम बंगाल, बिहार इलाकों के आदिवासी थे उन सभी आदिवासियों की जीवनी, साथ ही उनकी संस्कृति, अज्ञानता यहाँ देखने को मिलती है। आदिवासी समाज के लोग सीधे-साधे हैं। सामंतवादी व्यवस्था उनका शोषण करती हैं, तो दूसरी ओर आदिवासियों को उनके जंगल से, उनकी जमीनों से बेदखल करती हैं।

'जंगल के दावेदार' यह उपन्यास बंगाली लेखिका महाश्वेता देवी द्वारा लिखित है। बंगाल में रचित उपन्यास 'अरण्यक अधिकार' का हिंदी रूपांतर 'जंगल के दावेदार' हैं। 1979 में 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' से नवाजा गया है। उस समय 'जगत' नाम की पत्रिका थी उसमें धारावाहिक के रूप में प्रकाशित हुई। 'जंगल के दावेदार' यह एक जीवनी परख उपन्यास, चरित काव्य कहा जा सकता हैं। इसका महानायक बिरसा मुंडा है इस उपन्यास की कथावस्तु इ.स 1895, इ.स 1899, इ स 1900 में जो इस उपन्यास में बिरसा मुंडा द्वारा 'उलगुलान आंदोलन' चलाया गया है। कथानक लिखते समय काल्पनिकता का वर्णन नहीं किया है। उपन्यास 9 जून को बिरसा मुंडा की मृत्यु से शुरू होता है जेल में बिरसा की मृत्यु होती है यहाँ पर उपन्यास का अंत नहीं दिखाया है इसके बाद शुरू होती है बिरसा मुंडा की मौत कैसे हुई?, बिरसा कौन था?, यहाँ जेल में उसे क्यों लाया गया था?, कैसे लाया गया था ? इन सब

को जानने के लिए उस उपन्यास को जानना जरूरी है। इस उपन्यास में आदिवासी बांधवों में हो रहा शोषण के प्रति बिरसा मुंडा द्वारा हुआ संघर्ष को प्रतीक बनाया है। जिसे अपनी शक्ति की पहचान है और वह आदिवासी मुंडा जातियों का भगवान बनना स्वीकार करता है। उपन्यास में मानवीय संबंधों का वर्णन किया है जिससे वह देश में एकता का निर्माण होने का संदेश देता है। बिरसा मुंडा का जन्म इ.स 1875 में रांची में हुआ था। रांची कभी बिहार का हिस्सा था अब वह झारखंड में आया। बिरसा की प्राथमिक पढ़ाई साल्गा गांव में हुई। उसके बाद चाईसबार इंग्लिश मीडियम स्कूल में पढ़ने के लिए गए। बिरसा मुंडा को अपनी संस्कृति से, भूमि से, जंगल से बहुत प्रेम था। बिरसा के पिता का नाम सुहाना और मां का नाम करमी था। उनके तीन संताने थी गुप्ना, बिरसा और कनु और दो लड़कियां भी थी। लेखिका महाश्वेता देवी ने उपन्यास की भूमिका में ही पाठक का ध्यान आकर्षित किया है। 'जंगल के दावेदार' बिरसा मुंडा की मृत्यु से ही शुरुआत करके बाद में बिरसा मुंडा के जीवित समय की शुरू होता है। 1985 में बिरसा को अकेली कोठडी में रखते थे अमूल्य के साथ छोड़ने पर बिरसा को शिक्षा मिलती है। बिरसा को 'भगवान' बना देने का क्रम वर्णित होकर भी कथ्य में संलग्नता दिखाई देती है।

इस उपन्यास उलगुलान को, जंगल की कथा को, आदिवासियों की संस्कृति को समझते हैं। वहां सामंतवादी व्यवस्था भी चल रही थी सामंतवादी आदिवासी को खत्म करना चाह रहे थे। अंग्रेजों के न्याय व्यवस्था में आदिवासियों को कभी न्याय नहीं मिलता था। सबसे बड़ी बाधा भाषा की होती अंग्रेजी कोर्ट में जिस भाषा में बातचीत करते हैं वह आदिवासी कभी नहीं समझ पाते कि क्या बोल रहे हैं। जो सामंतवादी, जमींदार लोग हैं आदिवासी की जमीनों पर कब्जा करते, आदिवासियों को महामारी भय दिखाते हैं, तो कभी काम ना करने का, कभी फसल नष्ट हो जाने की बात करते थे कई बहाने बनाकर आदिवासियों की जमानो के पट्टे लिखवाते जाते थे। आदिवासी खुद अन्न को पैदा करने में सक्षम हैं लेकिन खाने को मिलना चाहिए उन्हें तो नमक के लिए भी तरसना पड़ता है बिरसा मुंडा एक तो इस उपन्यास का नायक है वह बात के लिए तरसता है उसका सपना है कि उसे भरपेट भात और नमक ही सही लेकिन भरपेट भात का भोजन मिले सिर्फ उसे ही नहीं उसके साथ उन सभी आदिवासियों के लिए बात उपलब्ध होने का सपना देखता है बात इतना सस्ता सस्ता सुलभ हो सकता था क्योंकि आदिवासी बात को उगाना जानते जानते थे वह जंगल को काट के धरती पर स्तोत्र बनाना जानते हैं फिर भी वह बात वह जंगल को काटते धरती पर खेत बनाना जानते थे फिर भी वह भाग को जंगल में काटते बात को उड़ा नहीं सकते थे बिरसा मुंडा की मां कर्मी नमक के लिए तरसती रहती है इनके इन केबिन में मशीनें भी अपना पैर जमा चुकी थी आदिवासियोंकों बीच में पैसे का लालच देकर भात का लालच देकर, अन्न का लालच देकर लगातार धर्म को परिवर्तन करना चाहती थी अज्ञानता वश सभी आदिवासी इस चक्र में फंसते चले जाते थे आदिवासियों का बिरसा मुंडा नायक वह बचपन से ही विद्रोही वह विलक्षण प्रतिभा का धनी है किसी भी तरीके से वह अपनी पढ़ाई करता है उसे जंगल से, अपनी संस्कृति से प्रेम है आदिवासी लोगों को अंधविश्वास से दूर करना चाहता है सामंतवादी व्यवस्था के चक्रव्यूह से निकालना चाहता है, वह चाहता है कि लोगों को भरपेट खाना मिले उनकी उन्नति हो, उसके जंगल पर आदिवासियों का अधिकार रहे वह इन सबके बीच में आनेवालों को खत्म करना चाहता था।

बिरसा स्कूल में पढ़ते थे तब के समय में मुंडावर सरदारों ने जमीन जमीनी को छीना था बिरसा मुंडा के मन में तबसे अंग्रेज शासकों के जमींदारों सामंतवादी व्यवस्था के खिलाफ विद्रोह की भावना ने जन्म लिया। वे आदिवासियों लिए गंगा की जमीन आंदोलन के समर्थक रहे उन्होंने अपने भाषणों में वाद-विवाद में, आदिवासियों के जंगल के जमीन पर हक्क है यह समझाया। हक्क के लिए लड़ने की ताकत को बढ़ाते हुए बिरसा मुंडा के संघर्ष की गाथा शुरू हुई। बिरसा मुंडा सरदारों द्वारा छिनी गई जमीनों को वापस करने के लिए 'उलगुलान आंदोलन' करता है। ई.स 1886 से ई.स 1890 तक का काल यह बिरसा का चाईसभा मिशन स्कूल में रहने उनके व्यक्तित्व को निर्माण काल साबित हुआ इस दौरान बिरसा मुंडा अंदर से बदल गए और उनके मन में स्वाभिमान की ज्वाला को पैदा कर दिया बिरसा मुंडा ने आंदोलन किया उसे ईसाई मशीनरी मशीनी युग के ने दबाया वादाखिलाफी और फरेब की वजह से बिरसा मुंडा बगावत के कारण सामने आए इसी इसी बिरसा के तेवर को देखते हुए उसे स्कूल से निकाल दिया गया 1890 में

बिरसा और उसके पिताजी करमी चाईसबा वापस चले गए। आदिवासियों के लिए सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक तथा जाति की दुर्दशा को देखकर उसके मन में क्रांति की भावना को जागृत मन ही मन किया कि मुंडा का शासन वापस लाएंगे आदिवासियों को जागरूक करेंगे।

बिहार के अनेक जिलों में घने जंगलों के बीच रहने वाले आदिम जातियों की अनुभूति और सनातन विश्वास पुरानी कथाओं से सजीव सचेत आस्था का चित्रण किया है। जंगलों को मां की तरह पूजनेवाले क़ौल संस्थान में हुई जातियों का शोषण के विरुद्ध और जंगल की कई सशक्त क्रांति की महागाथा का वर्णन को दर्शाया है। 25 वर्ष का अनपढ़ बिरसा 1980 के अंत में एक विद्रोह के संघर्ष करनेवाले लोगों के लिए भगवान बना उसने जीवन चिंतन में व आर्थिक और राजनीतिक परिस्थितियों में अमूलाग्र बदललाने के लिए 'भगवान' वह संबोधन का स्वीकार किया था। 9 जून साल 1984 को जेल में सवेरे 8:00 बजे बिरसा मुंडा की खून की उल्टी हुई इससे वह अचेत सा हो गया। उसकी मौत हो गई। 25 वर्ष की उम्र में वह क्रिमिनल कोड की धाराओं में बिरसा मुंडा को पकड़ा गया था। उसके केस लड़ रहे थे उसे विश्वास था कि उसे सजा नहीं होगी भोला-भाला बिरसा परिस्थिति से अनजान था। लोगों के लिए ख्वाब बनकर रहता है। उसके विरसा को जमीन को नियंत्रित करके रखा था बिरसा मुंडा को पकड़वाने के लिए महारानी को 500 रुपये डिप्टी कमिश्नर ने दिए थे। किसी भी मुंडा के पास इतने पैसे नहीं थे वे कभी इतने पैसे ख्याब में भी सोच नहीं सकते थे। बिरसा दूसरों को अपनी गिरफ्तारी की वजह नहीं मानता वह खुद को जिम्मेदार ठहराता था कि उसे नींद क्यों आ गई। बिरसा आंदोलन के लिए फूल देता है 'उलगुलान आंदोलन' के लिए सबको संगठित करता है, जगह-जगह विद्रोह करता है, बिरसा से अंग्रेज परेशान होते हैं उस 'उलगुलान आंदोलन' में कई लोगों की जाने जाती है। छल कपट करके अंग्रेज बिरसा मुंडा को पकड़ते हैं। जेल में उसे ठीक से खाना-पानी नहीं देते थे। जेल में उसे हैजा रोग हो जाता है उसका इलाज नहीं कराया जाता। एक साधारण सी बीमारी से उलगुलान का बड़ा नायक बिरसा मुंडा की मौत हो जाती है। बिरसा आंदोलन करने के लिए आदिवासियों को तयार किया था, लोगों को विश्वास दिया था कि धरती माता को 'भगवान' घोषित करता है। वह कहता था कि माँ, मैं धरती का भगवान हूँ, मुझे ईश्वर ने कहा है कि हमें इस धरती की सामंतवादी व्यवस्था से बाहर आना है। हमें अंग्रेजी दुश्मनों को इस धरती पर से उखाड़ कर फेंकना है क्योंकि वह हमेशा हमारा जंगल हमसे छीन रही रहे हैं, हमारी माँ को छिन रही है, हमारी स्वतंत्रता को छीन रहे है इसलिए इनसब को खत्म करना है, इनसब के लिए हमारे पास तीर कम्मान का हथियार है। यह हमारे जंगलों के रक्षक है इसी से हम हमारी आजादी छीन कर लेंगे और हम उन्हें हमारे जंगलों से बाहर कर देंगे, भगा देंगे। बिरसा के इस 'उलगुलान आंदोलन' पर बहुत सारे आदिवासी लोग सक्रिय भाग लेते हैं और कई लोग इस आंदोलन में शहीद भी होते बिरसा की मृत्यु के बाद हालांकि यह आंदोलन बहुत समय तक टिका नहीं महाश्वेता देवी ने इस किताब के माध्यम से उस आंदोलन की याद दिलाई है जिसे कोई लोग भूल चुके हैं। आदिवासियों के बलिदान को उनका स्थान दिलाया है जो उन्हें बहुत पहले मिलना चाहिए था जो उन्हें नहीं मिला था। देश के आपातकाल के समय में यह उस दौर के हिसाब से युवकों को बहुत ही महत्वपूर्ण उपन्यास है उसे पढ़ने के बाद इतिहास से रूबरू होने का मौका मिलता है। आदिवासी विमर्श तो आज चल रहा है हम आदिवासियों के बारे में बहुत कुछ जानते हैं लेकिन वह किताब लिखी गई तब आदिवासी विमर्श नहीं था। साहित्य के क्षेत्र में बहुत सजीव, यथार्थवादी रचना का आभाव मिलता है उस समय जब-जब किताब सबके सामने आई तो पाठकों ने उसे हाथों-हाथ अपना किया था। यह उपन्यास अच्छा था, अच्छा है, इससे मुंडा समाज से परिचित होने का मौका मिलता है। इससे आदिवासी समाज का पूरा जीवन समझता हैं। जंगल के लिए आदिवासी और आदिवासियों के लिए जंगल कितने महत्वपूर्ण है यह समझ में आता है।

निष्कर्ष :-

'जंगल के दावेदार' के मूल में मुंडा समाज के लोगो को अपने अस्तित्व, संकट से मुक्त होना है उसके लिए किया गया प्रयन्त, प्रयास हैं। अंग्रेज़ो, सामंतवादी व्यवस्था, जमींदार, दमन के द्वारा मुंडा समाज का शोषण करते हैं। बिरसा मुंडा इस आदिवासियों का स्त्रोत बना है। बिरसा ईसाई, पारशियों और हिन्दू धर्म के लोगों के धार्मिक नेताओं की सहायता चाहता था लेकिन

उसे वह मदत न मिलने पर वह खुद लड़ने का निर्णय लेता है। परंपरागत धर्म का सहारा न लेकर वह स्वयं आपना धर्म बनाता हैं। जिसे 'बिरसाहीन' कहा जाता था। इस उपन्यास में लेखिका ने मुंडा समुदाय के लोकनायक बिरसा मुंडा को कथा नायक के रूप में, मुंडा विद्रोह के संदर्भ में, शोषण, दमन, विद्रोह के विरोध में चेतना को उजागर किया हैं। बिरसा मुंडा को आदिवासियों के भगवान के रूप में चित्रित किया हैं। आदिवासियों के आधिकारों के लिए अंग्रेजों, सामंतवादी व्यवस्था के लोगों से संगर्ष करता हैं। बिरसा के मृत्यु के बाद भी उसने दूसरे बिरसा को जन्म देता दिखाई देता हैं। गरीबी, अभाव, शोषण, आत्याचार उसके संघर्ष यात्रा को नहीं रोक पाते। बिरसा जन- जन में बसा है। उसकी विचारधारा को, उसकी क्रांति को कोई रोक नहीं सकता। बिरसा मुंडा आज मरकर भी जिंदा है, हर उस आदिवासियों के मन में, उस व्यक्ति के मन में जिसे बिरसा मुंडा ने अन्याय के विरूढ़ा लढने को तैयार किया है। अंग्रेजों के दमन के विरोध में बिरसा मुंडा के संघर्ष गाथा का वर्णन 'जंगल के दावेदार' इस उपन्यास में चित्रित हुआ हैं।

आधार ग्रंथ :-

1. 'जंगल के दावेदार', महाश्वेता देवी, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008

संदर्भ ग्रंथ:-

1 मराठी विश्वकोश, संपादक लक्ष्मीशास्त्री जोशी, खंड- 2, पृष्ठ 40
2 भारतीय संस्कृति कोष, संपादक महादेव शास्त्री जोशी, खंड 1, पृष्ठ -428
3 मानक हिंदी शब्दकोश, संपादक शिवप्रसाद भारद्वाज शास्त्री, पृष्ठ -72
4 भारतीय संस्कृति कोष, संपादक महादेव शास्त्री जोशी, खंड 1, पृष्ठ -428